Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

कक्षा –12 महत्वपूर्ण पद्यांश

पद्यांशो से बनने वाले सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों के साथ

पवन दूतिका

कैकेयी का अनुताप

श्रद्धा मनु

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

पवन दूतिका

पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

एक पद्यांश से बनने वाले अनेक प्रश्नो का हल परीक्षा को दृष्टि में रखकर बहुत महत्वपूर्ण पद्यांश ही रखे गए हैं , परीक्षार्थी इन्हें तैयार अवश्य कर लें|

1. बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली।
आके आँसू दृग–युगल में थे धरा को भिगोते ।।
आई धीरे इस सदन में पुष्प–सद्गंध को ले।
प्रात: वाली सुपवन इसी काल वातायनों से ।।

प्रश्नोत्तर –

A. रेखांकित अंश की व्याख्या ?

B. पद्यांश के रचनाकार एवं शीर्षक का नाम ?

1. प्रस्तुत पंक्तियों में राधिका किससे बातें कर रही है ?

उ० – प्रस्तुत पंक्तियों में राधिका पवन से बातें कर रही है|

2. प्रात: कालीन पवन किस मार्ग से राधिका जी के घर के अंदर आ रही है?

उ० – प्रात: कालीन पवन खिड़की द्वारा राधिका जी के घर के अंदर आ रही है|

3. काव्यांश में कौन–सा अलंकार है ?

उ० – काव्यांश में अनुप्रास अलंकार है |

4. श्रीमती राधिका पवन से क्या कहती हैं ?

उ०– श्रीमती राधिका पवन से कहती हैं कि हे प्यारी प्रात: वाली सुपवन तू मुझे इतना क्यों सताती है क्या टू भी काल की क्रूरता से कलुषित हुई है|

5. दृग–युगल का अर्थ लिखिए ?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

उ० – दृग–युगल का अर्थ – दोनों नेत्र|

6. काव्यांश में उल्लिखित रस का नाम लिखिए |

उ० – काव्यांश में उल्लिखित रस – विप्रलंभ श्रृंगार रस है |

2. लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये।
होने देना विकृत–वसना तो न तू सुन्दरी को ।।
जो थोड़ी भी श्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना।
होंठों की औ कमल–मुख की म्लानतायें मिटाना ।।
कोई क्लान्ता कृषक–ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे–धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना ।।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को ।।

प्रश्नोत्तर –

1. राधा पवन को लज्जाशील स्त्री के सम्बन्ध में क्या समझाती है ?

उ० – राधा पवन को लज्जाशील स्त्री के सम्बन्ध में यह समझाती है कि तुझे मार्ग में कोई लाजवंती स्त्री दिखाई दे तो उसके वस्त्र न देना |

2. राधा के अनुसार पवन थकी हुई स्त्री की थकावट कैसे दूर करेगी ?

उ० – राधा पवन से कहती है कि यदि कोई थकी हुई स्त्री दिखाई दे तो उसके निकट जाकर उसकी थकावट को स्पर्श करके दूर करना |

3. कमल– मुख में कौन– सा अलंकार है ?

उ० – रूपक अलंकार |

4. राधा पवन को क्लांत व्यक्ति के सम्बन्ध में क्या बताती है ?

उ० – राधा पवन को क्लांत व्यक्ति के सम्बन्ध में यह बताती है कि यदि रास्ते में कोई थका हुआ यक्ति दिखाई दे तो उसकी थकावट को दूर करना |

5. व्योम तथा भूतान्गना का क्या अर्थ है ?

उ०– योम– आकाश

भूतान्गना – गर्मी से तप्त किसान की पुत्री

6. राधा पवन से कृषक–स्त्री की क्या सहायता करने को कहती है?

राधा पवन से कृषक स्त्री की थकावट दूर करने को और आकाश में बदल लाकर उसकी छाया प्रदान कर प्रसन्न करने को कहती है |

7. प्रतुत पंक्तियों में राधा को किस रूप में चित्रित किया गया है ?

उ० – प्रतुत पंक्तियों में राधा को लोक कल्याणकारी रूप में चित्रित किया गया है |

8. पद्यांश में प्रयुक्त एक अलंकार लिखिए |

उ० – अनुप्रास व रूपक अलंकार |

3. तू देखेगी जलद–तन को जा वहीं तद्गता हो ।
होंगे लोने नयन उनके ज्योति–उत्कीर्णकारी ।।
मुद्रा होगी वर बदन की मूर्ति–सी सौम्यता की ।
सीधे साधे वचन उनके सिक्त होंगे सुधा से ।।

प्रश्नोत्तर –

1. राधा पवन दूतिका को किसकी पहचान बता रही हैं?

उ० – राधा पवन दूतिका को श्रीकृष्ण की पहचान बता रही हैं|

2. प्रस्तुत पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है ?

उ० – 'जलद – तन' में रूपक अलंकार तथा 'सीधे सादे सिक्त' में अनुप्रास अलंकार है |

3. राधा ने कृष्ण की पहचान के लिए किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उ० – राधा ने कृष्ण की पहचान के लिए निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया है–

I. मेघ के सामान शोभा वाले

II. उनके शरीर की श्यामलता लिए हुए नील कमल के सामान मोहक|

4. पद्यांश में राधा जी ने तद्गता किसे कहा है ?

उ० – पवन को कहा है |

5. जलद– तन में कौन–सा अलंकार है?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

उ० – 'जलद – तन' में रूपक अलंकार है|

6. जलद– तन किसका विशेषण है ?

उ० – श्री कृष्ण का |

4. नीले फूले कमल दल–सी गात की श्यामता है।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला ।।
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढ़ाती ।
सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती–सी प्रभा है ।
साँचे ढाला सकल वपु है दिव्य सौन्दर्यशाली।
सत्पुष्पों–सी सुरभि उसकी प्राण–सम्पोषिका है।
दोनों कन्धे वृषभ–वर–से हैं बड़े ही सजीले।
लम्बी बाँहें कलभ–कर–सी शक्ति की पेटिका हैं।

प्रश्नोत्तर –

1. राधा पवन दूतिका को कृष्ण की क्या पहचान बता रही है ?

उ० – राधा पवन दूतिका को कृष्ण की पहचान यह बताती है कि कृष्ण कटि में पीला वस्त्र धारण करते हैं और कमल के समान उनके शरीर की श्यामता है|

2. श्रीकृष्ण अपनी कमर में कैसा वस्त्र धारण करते हैं?

उ० – श्रीकृष्ण अपनी कमर में पीला वस्त्र धारण करते हैं|

3. इस काव्यांश में कौन सा अलंकार है ?

उ० – उपमा अलंकार |

4. अलक, सकल, कलभ –कर, वृषभवर, सुरभि एवं कांति शब्दों के अर्थ लिखिए |

उ० – अलक– बाल , सकल– सम्पूर्ण , कलभ –कर – हाथी की सूड के समान , वृषभवर– श्रेष्ठ बैल , सुरभि– सुगंध |

5. कलभ कर –सी में कौन सा अलंकार है ?

उ० – उपमा अलंकार है|

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

6. श्रीकृष्ण के शरीर की श्यामलता कैसी है?

उ०– नीले फूले कमल दल के समान है|

5. कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को ।।
यों देना ऐ पवन बतला फूल–सी एक बाला।
म्लाना हो हो कमल–पग को चूमना चाहती है ।।

प्रश्नोत्तर –

1. राधिका जी दूतिका के रूप में किसे भेज रही है ?

उ० – राधिका जी दूतिका के रूप में पवन को भेज रही है |

2. राधिका जी ने दूतिका से क्या करने को कहा है ?

उ० – घर में कोई सुन्दर मुरझाया हुआ फूल पडा हो तो उसे प्रेम के साथ उठाकर प्रियतम के चरणों में डालने को कहती है |

3. कमल –पग में कौन सा अलंकार है ?

उ०– रूपक अलंकार |

4. कुम्हला एवं म्लाना शब्दों का अर्थ लिखो ?

उ० – कुम्हला एवं म्लाना – मुरझाया एवं मलिन/मुरझाया

5. कमल पग को कौन चूमने की इच्छा प्रकट कर रही है ?\

उ०– राधिका जी |

6. पूरी होवें न यदि तुझसे अन्य बातें हमारी।
तो तू मेरी विनय इतनी मान ले औ चली जा।
छू के प्यारे कमल–पग को प्यार के साथ आ जा।
जी जाऊँगी हृदयतल में मैं तुझी को लगाके।।

प्रश्नोत्तर –

1. राधिका क्यों पवन को अपने हृदय से लगाकर संतोष करने के लिए कह रही हैं?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

उ०– राधिका इसलिए पवन को अपने ह्रदय से लगाकर संतोष करने के लिए कह रही है कि तुमसे अगर मेरी ये बातें पूरी न हो सके तो तू उनके चरण कमल को छूकर चली आना |

2. राधिका किससे विनती कर रही है ?

उ०– पवन से |

3. इस पद्यांश में कौन सा अलंकार है?

उ०– रूपक, अनुप्रास |

4. राधा किसे ह्रदयतल में लगा के जी जायेंगी?

उ०– श्रीकृष्ण के चरणों को स्पर्श की हुई पवन को |

7. जाते जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखावे।
तो जा के सन्निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना।।
धीरे–धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सद्गन्धों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना।।

1. राधिका पवन से मार्ग में किसके दुःख दूर करने के लिए कहा है ?

उ०– राधिका पवन से मार्ग में थके हुए व्यक्ति की थकावट / दुःख को दूर करने के लिए कहा है |

2. इस पद्यांश में राधिका जी को किस रूप में चित्रित किया गया है ?

उ०– लोक कल्याणकारी रूप में

3. काव्यांश में कौन सा अलंकार है ?

उ०– उपमा, संदेह व अनुप्रास |

4. क्लान्ति एवं उत्ताप का अर्थ लिखो?

उ०– क्लान्ति – थकन / दुःख उत्ताप – ताप /गर्मी

8. सूखी जाती मलिन लतिका जो धरा में पड़ी हो।
तो पाँवों के निकट उसको श्याम के ला गिराना।
यों सीधे से प्रकट करना प्रीति से वंचिता हो।
मेरा होना अति मलिन औ सूखते नित्य जाना।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

कोई पत्ता नवल तरु का पीत जो हो रहा हो।
तो प्यारे के दुग युगल के सामने ला उसे ही।।
धीरे–धीरे सँभल रखना और उन्हें यों बताना।।
पीला होना प्रबल दुःख से प्रोषिता–सा हमारा।।

1. राधा पवन से पृथ्वी पर पड़ी हुई लता को क्या करने के लिए कहती है ?

उ०– श्रीकृष्ण के चरणों में लाकर रखने के लिए कहती है |

2. सूखी लता से राधा कृष्ण को क्या सन्देश देना चाहती है ?

उ०– सूखी लता से राधा कृष्ण को सन्देश देना चाहती है कि वह प्रेम से विरहित होकर किस प्रकार इस सूखी लता के समान दिन प्रति दिन सूखती व मलिन होती जा रही है|

3. पीले पत्ते को श्रीकृष्ण के सामने लाने से राधा का क्या अभिप्राय है ?

उ० –जिस प्रकार नवीन वृक्ष का कोपल पीला पड़ गया है, इसी प्रकार प्रोषित पतिका नायिका के समान प्रेम विरह में कोई बावली हो रही है|

4. पोषिता –सा में कौन सा अलंकार है ?

उ०– उपमा अलंकार |

9. मेरे प्यार नव जलद से कंज से नेत्रवाले।
जाके आए न मधुबन से औ न भेजा सँदेसा।।
मैं रो रो के प्रिय–विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुःख कथा श्याम को तू सुना दे।

1. राधा किसके द्वारा कृष्ण को सन्देश भिजवाती है ?

उ०– पवन के द्वारा |

2. राधा की मनोदशा का वर्णन कीजिए |

उ०– राधा प्रिय वियोग में रो रो के बावली हो गयो है |

3. उपर्युक्त पंक्तियों में कौन सा रस है ?

उ०– वियोग श्रृंगार रस

4. जलद और कंज का अर्थ लिखिए |

जलद – बादल , कंज – कमल

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

कैकेयी का अनुताप

' यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को ।
' चौंके सब सुनकर अटल केकयी - स्वर को ।
सबने रानी की ओर अचानक देखा ,
वैधव्य तुषारावृता यथा विधु - लेखा ।
बैठी थी अचल तथापि असंख्यतरंगा ,
वह सिंही अब थी हहा ! गोमुखी गंगा
" हाँ , जनकर भी मैंने न भरत को जाना ,
सब सुन लें , तुमने स्वयं अभी यह माना ।
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया ,
अपराधिन मैं हूँ तात , तुम्हारी मैया ||

- पद्यांश का प्रसंग क्या है?

उ०- श्रीराम ने कैकेयी को सम्बोधित करते हुए कहा था कि भरत की जननी होते हुए भी वे उन्हें समझ नहीं पाई । उसी बात को लक्ष्य कर कैकेयी राम से कहती हैं |

- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए |

उ०- उस समय विधवा के वेश में वह सफेद वस्त्र धारण किए ऐसी प्रतीत हो रही थी , मानो कुहरे से ढकी चाँदनी हो । यद्यपि कैकेयी निश्छल और स्थिर बैठी हुई थी , तथापि उसके हृदय में अनेक प्रकार के भावों की लहरें उठ रही थीं । सिंहनी जैसा रूप धारण करनेवाली वह कैकेयी अब गोमुखी गंगा के समान शान्त , शीतल और पवित्र हो उठी थी ; अर्थात् उसके मुख से गंगाजल के समान कल्याणकारी और मधुर शब्द निकल रहे थे । कैकेयी ने राम से कहा कि यह सत्य है कि भरत को जन्म देकर भी मैं उसे न पहचान सकी । सभी व्यक्ति मेरी इस बात को सुन लें । राम ने भी अभी इसी बात को स्वीकार किया है ।

भाषा- साहित्यिक खड़ीबोली
अलंकार - उत्प्रेक्षा , उपमा एवं रूपका
रस - शान्त ।
छन्द - सवैया ।

1. पद्यांश के पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए ।

उ०- प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित महाकाव्य ' साकेत ' के आठवें सर्ग से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' कैकेयी का अनुताप ' शीर्षक से उद्धृत है ।

2. राम की उस रात्रिकालीन सभा में सभी क्या सुनकर चौंक पड़े ?

उ०- राम की उस रात्रिकालीन सभा में सभी कैकेयी के इस दृढ़ स्वर को सुनकर चौंक पड़े कि हे राम ! यदि तुम्हारी बात सत्य है कि मैं माँ होते भी भरत की बात न समझ पाई तो अब तुम घर को लौट चलो ; अर्थात् अपनी नासमझी में मैंने जो तुम्हारे वनवास की कामना की थी , मेरी उस भूल को तुम भुला दो ।

3. एक विधवा के वेश में कैकेयी उस समय कैसी प्रतीत हो रही थी ?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

उ०- एक विधवा के वेश में कैकेयी उस समय सफेद वस्त्र धारण किए हुए ऐसी प्रतीत हो रही थी , मानो कुहरे से ढकी चाँदनी हो ।

4. सिंहनी जैसा रूप धारण करनेवाली कैकेयी इस समय किस रूप में दिखाई दे रही थी ?

उ०- सिंहनी जैसा रूप धारण करनेवाली कैकेयी इस समय गोमुख गंगा के समान शान्त , शीतल और पवित्र रूप में दिखाई दे रही थी ।

5. प्रस्तुत पद्यांश में किन - किन पात्रों के बीच संवाद हो रहा है ?

उ०- प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी और राम के बीच संवाद हो रहा है|

6. घर लौट चलने के लिए कौन किससे आग्रह कर रहा है ?

उ०- घर लौट चलने के लिए कैकेयी राम से आग्रह कर रही है ।

7. सिंहनी और गोमुखी गंगा से क्या अभिप्राय है ?

उ०- सिंहनी ' का अभिप्राय यहाँ पर वीरांगना और साहसिनी से है । ' गोमुखी ' से अभिप्राय शान्त और पवित्र वाणीवाली है ।

(2)

दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है ,
पर , अबलाजन के लिए कौन - सा पथ है ?
यदि मैं उकसाई गई भरत से होऊँ ,
तो पति समान ही स्वयं पुत्र भी खोऊँ ।
ठहरो , मत रोको मुझे , कहूँ सो सुन लो ,
पाओ यदि उसमें सार उसे सब चुन लो ।
करके पहाड़ - सा पाप मौन रह जाऊँ ?
राईभर भी अनुताप न करने पाऊँ ?
" थी सनक्षत्र शशि - निशा ओस टपकाती ,
रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती ।
उल्का - सी रानी दिशा दीप्त करती थी ,
सबमें भय - विस्मय और खेद भरती थी ।
" क्या कर सकती थी , मरी मन्थरा दासी ,
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी

- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए |

उ०- सौगन्ध खाना यद्यपि व्यक्ति की कमजोरी का प्रमाण है , तथापि मुझ अबला के लिए सौगन्ध खाकर अपनी बात को प्रमाणित करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है । इस प्रकार सौगन्ध खाते हुए कैकेयी ने कहा कि वास्तविकता यह है कि इस कार्य के लिए भरत ने मुझे नहीं उकसाया है । यदि कोई इस बात को सिद्ध कर दे कि मुझे भरत ने इस कार्य के लिए प्रेरित किया है तो मैं पति के समान ही अपने पुत्र को भी खो दूं ।

अलंकार - उपमा एवं अनुप्रास ।

रस - शान्त ।

1. पद्यांश के पाठ और कवि का नाम लिखिए ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित महाकाव्य ' साकेत ' के आठवें सर्ग

कैकेयी का अनुताप ' शीर्षक से उद्धृत है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। अथवा

3. "दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है।" इस पंक्ति में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।

"दुर्बलता की ही चिह्न विशेष शपथ है।" इस पंक्ति को कैकेयी ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए पंचवटी में उपस्थित सभा और श्रीराम के समक्ष कहा था। जिसका आशय यह था कि सौगन्ध खाना यद्यपि व्यक्ति की कमजोरी का प्रमाण है, तथापि मुझ अबला के लिए सौगन्ध खाकर अपनी बात को प्रमाणित करने के अतिरिक्त और कोई उपाय शेष नहीं रह गया है।

4. अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए कैकेयी के पास एकमात्र क्या उपाय था ?

अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए कैकेयी के पास एकमात्र उपाय शपथ खाकर अपनी बात कहना ही था।

5. अपने पाप और पश्चात्ताप के सन्दर्भ में कैकेयी ने क्या कहा ?

अपने पाप और पश्चात्ताप के सन्दर्भ में कैकेयी ने कहा कि मेरे लिए यह सम्भव नहीं है कि मैं पहाड़ से बड़ा पाप करके भी चुप रह जाऊँ और राई जैसा छोटा - सा पश्चात्ताप भी न कर सकूँ।

कहते आते थे यही अभी नरदेही,
' माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।
' अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता,
' है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।'

- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

हे पुत्र राम! अभी तक लोग कहावत के रूप में यही कहते आए हैं कि पुत्र माता के प्रति चाहे कितने ही अपराध कर ले, किन्तु माता कभी भी उस पर क्रोध नहीं करती और न ही वह क्रोध में भरकर पुत्र का कोई अहित करती है। इसीलिए कहा जाता है कि पुत्र भले ही कुपुत्र सिद्ध हो, किन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती। परन्तु मैंने तो माता होकर भी पुत्र भरत और तुम्हारा दोनों का ही अहित किया है; अत: मैं वास्तव में लोगों की दृष्टि में एक बुरी माता हूँ।

मगर मैंने यह सब दुष्कृत्य कोई अपने आप जान - बूझकर नहीं किया है, बल्कि मेरा भाग्य मेरे विपरीत था, जिसने मुझसे यह सब कार्य कराया; फिर मैं अपने दुर्भाग्य के आगे क्या कर सकती थी ? अब तो मेरे दुष्कृत्य को देखकर लोग यही कहेंगे कि पुत्र ने तो माता के प्रति अपने कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाह करते हुए स्वयं को सच्चा पुत्र सिद्ध कर दिया, किन्तु माता कुमाता हो गई। इस प्रकार अब लोग पुरानी कहावत के स्थान पर यह नई कहावत कहा करेंगे कि पुत्र तो सदैव पुत्र ही रहता है, भले ही माता कुमाता बन जाए।

अलंकार - अनुप्रास, बीप्सा।
रस - करुण एवं शान्त।
छन्द - सवैया।
गुण – प्रसाद।

1. कविता का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित महाकाव्य ' साकेत ' के आठवें सर्ग
कैकेयी का अनुताप ' शीर्षक से उद्धृत है।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

2. " कहते आते थे यही अभी नरदेही , माता न कुमाता , पुत्र कुपुत्र भले ही । " इस पंक्ति के माध्यम से कैकेयी ने क्या कहा है ?

इस पंक्ति के माध्यम से कैकेयी ने यह कहा है कि अभी तक लोग कहावत के रूप में यही कहते आए हैं कि पुत्र माता के प्रति चाहे कितने ही अपराध कर ले , किन्तु माता कभी भी उस पर क्रोध नहीं करती और न ही क्रोध में अपने पुत्र का कोई अहित करती है , परन्तु मैंने तो माता होकर पुत्र भरत और तुम्हारा ; दोनों का ही अहित किया है । इसलिए मैं वास्तव में लोगों की दृष्टि में एक बुरी माता हूँ ।

3. कैकेयी के अनुसार उनसे हुआ पाप किसने कराया ?

कैकेयी के अनुसार उन्होंने कोई भी दुष्कृत्य जानबूझकर नहीं किया । उनका भाग्य ही उनके विपरीत था , जिसने उनसे ऐसा अपराध कराया ।

4. कैकेयी के अनुसार उनके दुष्कृत्य को देखकर अब लोग क्या कहेंगे ?

यही कहेंगे कि पुत्र तो सदैव पुत्र ही रहता है , भले ही माता कुमाता बन जाए ।

5. नरदेही ' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए |

नरदेही शब्द का अर्थ है - नर को देह धारण करनेवाला अर्थात् मनुष्य

(4)

बस मैंने इसका बाह्य - मात्र ही देखा ,
दृढ़ हृदय न देखा , मृदुल गात्र ही देखा ।
परमार्थ न देखा , पूर्ण स्वार्थ ही साधा ,
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा ।
युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी '
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी ।
' निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा
' धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा

- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

मैंने अपने इस पुत्र (भरत) का मात्र ऊपरी रूप ही देखा , मैं उसके दृढ़ हृदय को नहीं देख सकी । मैंने इसके कोमल गात (शरीर) को ही देखा , मैं इसके पारमार्थिक स्वरूप को न देख पाई और अपना पूर्ण स्वार्थ साधना चाहा । इस कारण ही तो आज मेरा जीवन बाधाग्रस्त है ।

भाषा - शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली ।
अलंकार - अनुप्रास ।
रस – शांत |

1. " युग - युग तक चलती रहे कठोर कहानी , रघुकुल में थी एक अभागिन रानी । " इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए ।

" युग - युग तक चलती रहे कठोर कहानी , रघुकुल में थी एक अभागिन रानी । " इस पंक्ति का भाव कैकेयी के इस कथन में निहित है कि उसने अपने जीवन में इतना अधिक गम्भीर अपराध किया है कि युग - युग तक सारा संसार इस कहानी को सुनता रहेगा कि राजा रघु के कुल में एक ऐसी रानी थी , जो सर्ववैभव - सम्पन्न होकर भी बहुत अभागी थी ।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

2. कैकेयी के अनुसार उन्होंने भारत में केवल क्या देखा ?

कैकेयी के अनुसार उन्होंने भरत का मात्र ऊपरी रूप ही देखा , वे अपने पुत्र के दृढ़ हृदय को नहीं देख पाई । उन्होंने भरत के कोमल गात को ही देखा और उसके रूप में केवल अपना स्वार्थ ही देखा , उसके हृदय के पारमार्थिक रूप को नहीं देख पाई ।

3. कैकेयी के शब्दों में प्रत्येक जन्म में उनकी आत्मा क्या सुनेगी ?

उ०- कैकेयी के शब्दों में प्रत्येक जन्म में उनकी आत्मा यही सुनेगी कि धिक्कार है उस रानी कैकेयी को , जिसे महास्वार्थ ने घेर लिया था|

4. प्रस्तुत पद्यांश में किन - किन पात्रों के बीच संवाद हो रहा है ?

प्रस्तुत पद्यांश में राम और कैकेयी पात्रों के बीच संवाद हो रहा है ।

5. दृढ़ हृदय और मृदुल गात्र शब्द से किसकी ओर संकेत है ?

दृढ़ हृदय और मृदुल गात्र शब्द से भरत की ओर संकेत है ।

6. किस पात्र को महास्वार्थ ने घेर लिया था ?

कैकेयी को महास्वार्थ ने घेर लिया था ।

7. युग - युग तक कौन - सी कठोर कहानी चलती रहे ?

युग - युग तक यह कठोर कहानी चलती रहे कि रघुकुल में एक अभागिन रानी थी ।

8. रानी कैकेयी को जन्म - जन्मान्तर क्या सुनना पड़ेगा ?

रानी कैकेयी को जन्म - जन्मान्तर तक यह सुनना पड़ेगा कि उस कैकेयी को धिक्कार है , जिसे महास्वार्थ ने घेर लिया था ।

9. गात्र ' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

गात्र शब्द का अर्थ है - शरीर ।

5. " हा ! लाल ? उसे भी आज गमाया मैंने ,
विकराल कुयश ही यहाँ कमाया मैंने ।
निज स्वर्ग उसी पर वार दिया था मैंने ,
हर तुम तक से अधिकार लिया था मैंने ।
पर वही आज यह दीन हुआ रोता है ;
शंकित तब से धृत हरिण - तुल्य होता है ।
श्रीखण्ड आज अंगार - चण्ड है मेरा ,
तो इससे बढ़कर कौन दण्ड है मेरा||

- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

वही मेरा पुत्र आज दीन - हीन होकर रुदन कर रहा है । वह पकड़े हुए हिरन की भाँति सबसे भयभीत है । चन्दन के समान शीतल स्वभाववाला मेरा पुत्र भरत जलते हुए अंगारे के समान प्रचण्ड हो रहा है । इससे बढ़कर दण्ड मुझ अभागी माँ के लिए और क्या हो सकता है कि मेरा पुत्र ही मुझसे कुपित है । अतः मुझे और बड़ा दण्ड न दो ।
भाषा - साहित्यिक खड़ीबोली ।
शैली - प्रबन्ध ।
अलंकार - उपमा एवं अनुप्रास

रस - शान्त।

शब्दशक्ति - लक्षणा

गुण – प्रसाद।

1. कैकेयी ने भरत को खोने के सन्दर्भ में श्रीराम से क्या कहा ?

कैकेयी ने श्रीराम से कहा कि मैंने आज अपने उस पुत्र को भी खो दिया है , जिसके लिए मैंने यह कुकृत्य किया है। अपने इस कृत्य से मैंने ' भयंकर अपयश ही प्राप्त किया है।

2. कैकेयी ने भरत के रुदन और उसके भय के सम्बन्ध में क्या कहा ?

कैकेयी ने श्रीराम से कहा कि आज भरत दीन - हीन होकर रुदन कर रहा है। वह आज पकड़े हुए हिरन की भाँति सबसे भयभीत है।

3. अपने दण्ड के सम्बन्ध में कैकेयी ने अन्त में श्रीराम से क्या कहा ?

अंत में कैकेयी ने कहा कि मेरा पुत्र ही मुझसे पर क्रोधित है इससे बढ़कर और कौन सा दंड मुझ अभागन के लिए हो सकता है, अत: अब आप मुझे दंड न दो।

श्रद्धा – मनु

पद्यांशों से बनने वाले सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन

1. " कौन तुम? संसृति – जलनिधि तीर
तरंगों से फेंकी मणि एक
कर रहे निर्जन का चुपचाप
प्रभा की धारा से अभिषेक ?
मधुर विश्रान्त और एकांत
जगत का सुलझा हुआ रहस्य ;
एक करुणामय सुन्दर मौन
और चंचल मन का आलस्य।

A. पद्यांश के पाठ और कवि का नाम लिखिए।

उ० – पाठ/ शीर्षक का नाम – श्रद्धा मनु

लेखक का नाम – जयशंकर प्रसाद

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

B. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०– श्रद्धा मनु से प्रश्न करती है कि तुम कौन हो ? जिस प्रकार सागर की लहरें अपनी तरंगों से मणियों को अपने किनारे पर फेंक देती हैं , उसी प्रकार संसाररूपी सागर की लहरों के द्वारा इस निर्जन स्थान में फेंके हुए तुम कौन हो ? तुम चुपचाप बैठकर इस निर्जन स्थान को अपनी आभा से उसी प्रकार सुशोभित / सिंचित कर रहे हो , जैसे सागर – तट पर पड़ी हुई मणि उसके निर्जन तट को आलोकित करती है।

- भाषा – खड़ीबोली।
- अलंकार – रूपक ,उत्प्रेक्षा , उल्लेख , विशेषण – विपर्यय और विरोधाभास
- शब्दशक्ति – लक्षणा।
- गुण – माधुर्य।
- छन्द –16 मात्राओं का श्रृंगार छन्द |

C. प्रस्तुत पद्यांश में कौन किससे उसका परिचय पूछ रहा है ?

उ० –प्रस्तुत पद्यांश में श्रद्धा एक निर्जन स्थान में बैठे मनु , का परिचय पूछती है कि तुम कौन हो और इस निर्जन स्थान में क्यों बैठे हो ?

D. श्रद्धा के शब्दों में मनु चुपचाप बैठकर उस निर्जन स्थान को अपनी आभा से किस प्रकार सुशोभित कर रहे हैं ?

उ०– श्रद्धा के शब्दों में मनु चुपचाप बैठकर उस निर्जन स्थान को अपनी आभा से इस प्रकार सुशोभित कर रहे हैं , मानो सागर के तट पर पड़ी हुई मणि उसके निर्जन तट को आलोकित करती है|

E. मनु श्रद्धा को किस प्रकार एक रहस्य की भाँति प्रतीत हो रहे हैं ?

उ०– मनु श्रद्धा को मधुरता , थकावट और नवीनता से भरे संसार में सुलझे हुए रहस्य की भाँति प्रतीत हो रहे हैं

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

2. और देखा वह सुन्दर दृश्य
नयन का इन्द्रजाल अभिराम ;
कुसुम – वैभव में लता समान
चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम ;
हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लम्बी काया , उन्मुक्त ;
मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशु साल
सुशोभित हो सौरभ संयुक्त |

- भाषा – परिष्कृत खड़ीबोली।
- अलंकार – उपमा , रूपकातिशयोक्ति एवं अनुप्रास।
- रस – शृंगार।
- शब्दशक्ति – लक्षणा
- गुण – माधुर्य
- छन्द – शृंगार छन्द।

A. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०– जब मनु ने कुतूहलवश ऊपर की ओर देखा तो उन्हें सौन्दर्य से परिपूर्ण श्रद्धा अपने निकट खड़ी हुई दिखाई दी। यह एक अभूतपूर्व और सुन्दर दृश्य था। यह दृश्य उनके नेत्रों को जादू के समान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। मनु ने श्रद्धा को देखा तो उन्हें लगा कि वह फूलों से लदी हुई सौन्दर्यमयी लता के समान है। उन्होंने अनुभव किया कि जैसे चन्द्रमा की शीतल चाँदनी से लिपटा हुआ बादल का कोई टुकड़ा उनके सामने खड़ा है।

B. जब मनु ने कुतूहलवश ऊपर की ओर देखा तो उन्हें क्या दिखाई दिया ?

उ०– जब मनु ने कुतूहलवश ऊपर की ओर देखा तो उन्हें सौन्दर्य से परिपूर्ण श्रद्धा अपने निकट खड़ी हुई दिखाई दी। यह एक अभूतपूर्व और सुन्दर दृश्य

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

था। यह दृश्य उनके नेत्रों को जादू के समान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

C. श्रद्धा के प्रति मनु की प्रतीति को कवि ने एक लता और बादल के टुकड़े के रूप में किस प्रकार व्यक्त कराया है ?

उ०– श्रद्धा के प्रति मनु की प्रतीति को कवि ने इस रूप में व्यक्त किया है कि वह फूलों से लदी हुई सौन्दर्यमयी लता है। उसके रूप में जैसे चन्द्रमा की शीतल चाँदनी से लिपटा हुआ बादल का कोई टुकड़ा उनके सामने खड़ा हो|

D. इस काव्यांश में कवि ने श्रद्धा के किन गुणों को दर्शाया हैं ?

उ०– इस काव्यांश में कवि ने श्रद्धा के सभी उदात्त गुणों – उदारता , हृदय की व्यापकता , गम्भीरता , मधुरिमा आदि को दर्शाया है।

3. नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग ,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ – बन बीच गुलाबी रंग।
ओह ! वह मुख ! पश्चिम के व्योम
बीच जब घिरते हों घन श्याम
अरुण रवि मंडल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम ||

- भाषा – खड़ीबोली
- अलंकार – उत्प्रेक्षा , रूपक एवं विरोधाभास
- रस – शृंगार।
- शब्दशक्ति – अभिधा और लक्षणा।
- गुण – माधुर्य।
- छन्द – 16 मात्राओं का श्रृंगार छन्द।

A. प्रस्तुत पंक्तियों में किसकी सुन्दरता का वर्णन किया है ?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा की सुन्दरता का वर्णन किया है।

B. श्रद्धा के बालों ' और ' मुख ' की तुलना किससे की गई है ?

उ०– श्रद्धा के बालों की तुलना बादलों से और मुख की तुलना उन बादलों के बीच दिखाई देते सूर्य से की गई है।

C. मेघ – वन ' में कौन – सा अलंकार है ?

उ०– रूपक अलंकार है।

D. रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।

उ०– श्रद्धा अपने शरीर पर नीले रंग का मेष – चर्म (भेड़ की खाल) धारण किए है। उसकी वेशभूषा में से कहीं – कहीं उसके कोमल और सुकुमार अंग दिखाई दे रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था , मानो नीले बादलों के वन में गुलाबी रंग का सुन्दर बिजली का फूल खिला हुआ हो।

4. घिर रहे थे घुघराले बाल
अंश अवलम्बित मुख के पास
नील घन – शावक – से सुकुमार
सुधा भरने को विधु के पास।
और उस मुख पर वह मुसक्यान
रक्त किसलय पर ले विश्राम ;
अरुण की एक किरण अम्लान|
अधिक अलसाई हो अभिराम।

- अलंकार – रूपक , उपमा एक उत्प्रेक्षा
- रस – शृंगार

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

A. रेखांकित अंश की व्याख्या / भावार्थ कीजिए।

उ०– श्रद्धा के मुखड़े पर झूलनेवाली बालों की लट ऐसी प्रतीत हो रही थी , मानो कोई नन्हा बादल का टुकड़ा अमृत पीने के लिए सागर के तल को छूने का प्रयत्न कर रहा हो।

B. प्रस्तुत पंक्तियों में किसकी मनोरम छवि का चित्रण किया गया है ? अथवा यहाँ किसकी सुन्दरता का मनोरम वर्णन किया गया है ?

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा की मनोरम सुन्दरता का चित्रण किया गया है।

C. श्रद्धा के मुखड़े पर झूलनेवाली बालों की लट कैसी प्रतीत हो रही थी ?

उ०– श्रद्धा के मुखड़े पर झूलनेवाली बालों की लट ऐसी प्रतीत हो रही थी , मानो कोई नन्हा बादल का टुकड़ा अमृत पीने के लिए सागर के तल को छूने का प्रयत्न कर रहा हो।

D. इन पंक्तियों में सूर्य की अलसायी – सी किरण के सन्दर्भ में क्या कहा गया है ?

उ०– पंक्तियों में कवि ने सूर्य की अलसायी – सी किरण के सन्दर्भ में लिखा है कि श्रद्धा के मुखड़े पर मोहक मुस्कान ऐसी लग रही थी , जैसे लाल रक्तिम नवीन कोपल पर सूर्य की एक अलसायी – सी स्निग्ध किरण विश्राम कर रही हो

E. ' अरुण की एक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम ' में कौन – सा अलंकार है ?

उ०– ' अरुण की एक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम ' में ' अ ' वर्ण की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार और किरण के अलसाने में मानवीकरण अलंकार है।

F. ' अम्लान ' तथा ' अभिराम ' शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ०– ' अम्लान ' का अर्थ स्वच्छ , चटकीली तथा ' अभिराम ' का अर्थ मनोरम है |

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

5. कहा मनु ने , " नभ धरणी बीच बना जीवन रहस्य निरुपाय ;
एक उल्का – सा जलता भ्रान्त , शून्य में फिरता हूँ असहाय । "
' कौन हो तुम वसन्त के दूत बिरस पतझड़ में अति सुकुमार;
घन तिमिर में चपला की रेख तपन में शीतल मन्द बयार ! '
लगा कहने आगन्तुक व्यक्ति मिटाता उत्कंठा सविशेष
दे रहा हो कोकिल सानन्द सुमन को ज्यों मधुमय सन्देश ।

- भाषा – साहित्यिक खड़ीबोली ।
- शैली – प्रतीकात्मक और लाक्षणिक ।
- अलंकार – श्लेष , उपमा , रूपक एवं रूपकातिशयोक्ति
- रस – शृंगार ।
- शब्दशक्ति – लक्षणा ।
- गुण – प्रसाद एवं माधुर्य
- छन्द –16 मात्राओं का श्रृंगार छन्द

A. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उ०– मनु अपना परिचय श्रद्धा को देते हुए कहते हैं कि पृथ्वी और आकाश के बीच में इस नीरव स्थान पर मेरा एकाकी जीवन एक पहेली बना हुआ है । उसे सुलझाने का मेरे पास कोई उपाय भी नहीं है । मैं इस निर्जन स्थान मैं असहाय (बेसहारा) होकर अपनी वेदना से जलता हुआ उसी प्रकार इधर – उधर भटक रहा हूँ , जिस प्रकार एक जलता हुआ तारा टूटकर बिना किसी आश्रय के आकाश में इधर – उधर भटकता रहता है|

B. मनु ने श्रद्धा को आशा की किरण बताते हुए क्या कहा ?

उ०– मनु ने श्रद्धा को आशा की किरण बताते हुए यह कहा कि मेरे इस निराशापूर्ण जीवन में तुम आशा की किरण जैसी दिखाई दे रही हो । साथ ही

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

वेदना और व्यथा से तपे हुए इस मेरे जीवन में शीतल और मन्द पवन की भाँति नवीन चेतना का संचार कर रही हो।

C. एक टूटे हुए तारे के रूप में मनु की स्थिति की तुलना करते हुए कवि ने किसका चित्रण किया है ?

उ०– एक टूटे हुए तारे के रूप में मनु की स्थिति की तुलना करते हुए कवि ने मनु की निराश्रित और उद्देश्यहीन स्थिति का चित्रण किया है।

D. श्रद्धा को वसन्त का दूत बताते हुए कवि क्या संकेत देना चाह रहे हैं

उ०– श्रद्धा को वसन्त का दूत बताते हुए कवि यह संकेत देना चाह रहे हैं कि श्रद्धा मनु के जीवन में आशाओं का संचार करने के लिए उपस्थित हुई है।

E. आगन्तुक व्यक्ति से किसकी ओर संकेत किया गया है ?

उ०– आगन्तुक व्यक्ति से श्रद्धा की ओर संकेत किया गया है।

F. पद्यांश में किस पात्र की उत्कण्ठा मिटाने की बात कही गई है ?

उ०– पद्यांश में मनु की उत्कण्ठा मिटाने की बात कही गई है।

G. पद्यांश में किन पात्रों के बीच संवाद हो रहा है ?

उ०– पद्यांश में श्रद्धा – मनु के बीच संवाद हो रहा है।

6. दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाए है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप ,
जगत की ज्वालाओं का मूल ;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

- अलंकार– उत्प्रेक्षा , रूपक एवं उपना।
- रस – शान्त।
- शब्दशक्ति – लक्षणा।

A. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०– श्रद्धा मनु को सान्त्वना देते हुए तथा उन्हें प्रेरित करते हुए कहती है कि दुःख की पिछली काली रात के बीच ही सुख का नया सवेरा विकसित होता है। बीती हुई रात के झीने नीले धुंधलके के समान बीते हुए दुःख की अनुभूति सुख के बीच परदा बनी हुई है। वह सुखमय अरुण के प्रकट होने का ही पूर्व संकेत है|

B. इन पंक्तियों में श्रद्धा किसके हताश मन को प्रेरणा दे रही है ?

उ०– इन पंक्तियों में श्रद्धा मनु के हताश मन को प्रेरणा दे रही है।

C. " दुःख की पिछली रजनी बीच , विकसता सुख का नवल प्रभात। " इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उ०– " दुःख की पिछली रजनी बीच , विकसता सुख का नवल प्रभात। " इस पंक्ति का भाव यह है कि दुःख की पिछली काली रात के बीच ही सुख का नया सवेरा विकसित होता है। इसलिए मनुष्य को दुःख पाकर निराश होकर नहीं बैठ जाना चाहिए।

D. यहाँ शाप समझे जानेवाले दुःख के सन्दर्भ में क्या कहा गया है ?

उ०– यहाँ शाप समझे जानेवाले दुःख के सन्दर्भ में श्रद्धा मनु से कहती है कि जिस दुःखं को तुम शाप समझते हो और यह समझते हो कि यह संसार ही पीड़ाओं (दुःखों) का कारण है , वह मनुष्य को ईश्वर का रहस्यमय वरदान है ; क्योंकि यही पीड़ा मनुष्य को सुख प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

7. कहा आगन्तुक ने सस्नेह
"अरे , तुम इतने हुए अधीर ;
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मर कर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद ;
तरल आकांक्षा से हैं भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

- शैली – संवादात्मक एवं प्रतीकात्मक
- अलंकार – मानवीकरण।
- रस – शान्त
- छन्द –16 मात्राओं का शृंगार छन्द।

A. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए

उ०– मनु की बात सुनकर , आनेवाले (व्यक्ति) अर्थात् श्रद्धा ने स्नेह भाव के साथ मनु से कहा कि अरे ! ऐसा प्रतीत होता है कि तुम तो अपना धैर्य खो बैठे हो और अपने जीवन में उस सफलता को प्राप्त करने के प्रति निराश हो चुके हो , जिसे कर्मशील एवं साहसी पुरुष अपने कठिन परिश्रम के आधार पर प्राप्त करते हैं।

B. श्रद्धा मनु को किस प्रकार उत्साहित करती है ?

उ०– श्रद्धा मनु को उल्लास के साथ कर्मरत बने रहने की प्रेरणा देते हुए उत्साहित करती है।

C. मनु की बात सुनकर श्रद्धा ने उनसे स्नेहपूर्वक क्या कहा ?

उ०– मनु की बात सुनकर श्रद्धा ने उनसे स्नेहपूर्वक कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि तुम अपना धैर्य खो बैठे हो और अपने जीवन में उस सफलता को

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

प्राप्त करने के प्रति निराश हो चुके हो , जिसे कर्मशील और साहसी पुरुष अपने कठिन परिश्रम के आधार पर प्राप्त करते हैं।

D. " तप नहीं , केवल जीवन सत्य। " इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०– " तप नहीं , केवल जीवन सत्य। " इस पंक्ति का आशय श्रद्धा के मनु के प्रति व्यक्त किए गए इस कथन में निहित है कि केवल तपस्या करते रहना ही जीवन का सत्य नहीं है। दीनता और करुणा के भावों से ओत – प्रोत तुम्हारी यह मन:स्थिति क्षणिक है। जीवन तो प्रगति की अभिलाषाओं , आशाओं तथा प्रसन्नता से भरा हुआ है। इसलिए तुम अपनी अभिलाषाओं को जगाओ और उत्साहपूर्वक जीवन व्यतीत करो।

8. प्रकृति के यौवन का श्रृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल ;
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनको धूल।

A. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०–प्रसाद जी कहते हैं कि प्रकृति में प्राकृतिक छटा कभी भी बासी और मुरझाए हुए फूल से नहीं आती है। निर्जीव और बेजान फूल किसी भी रूप में प्रकृति को नया उल्लास नहीं प्रदान कर सकते हैं। ऐसे फूलों का हश्र तो धूल में मिलकर काल – कवलित होना ही हो सकता है।

- अलंकार उपमा , उत्प्रेक्षा एवं रूपक

B. " प्रकृति के यौवन का श्रृंगार , करेंगे कभी न बासी फूल। " इस पंक्ति में निहित भावार्थ को स्पष्ट कीजिए |

उ०– " प्रकृति के यौवन का श्रृंगार , करेंगे कभी न बासी फूल। " इस पंक्ति में निहित भावार्थ श्रद्धा की इन पंक्तियों में निहित है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति अपने यौवन का शृंगार मुरझाए हुए बासी फूलों से नहीं करती , वरन् नव – विकसित पुष्पों को ही अपने शृंगार हेतु उपयोग में लाती है।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

पुराने दु : खों की याद करके अपने जीवन को निराशा की गर्त में ढकेल देना उचित नहीं है। जिस प्रकार से प्रकृति नवीनता पसन्द करती है , उसी प्रकार हमें भी नवीन उत्साह और ताजगी के साथ कर्म – पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

C. कवि के अनुसार वास्तविक प्राकृतिक छटा कभी भी किस प्रकार के फूलों से नहीं आती है ?

उ०–कवि के अनुसार वास्तविक प्राकृतिक छटा कभी भी बासी और मुरझाए हुए फूलों से नहीं आती हैं।

D. प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने क्या दिया है ?

उ०– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने निराश व्यक्तियों की बासी फूल से तुलना करते हुए उन्हें उल्लासमय बने रहने का प्रभावपूर्ण सन्देश दिया है।

9. समर्पण लो सेवा का सार

सजल संसृति का यह पतवार ;
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पद तल में विगत विकार।
बनो संसृति के मूल रहस्य
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल ;
विश्व भर सौरभ से भर जाय
सुमन के खेलो सुन्दर खेल।

- अलंकार रूपक तथा अनुप्रास
- रस – संयोग शृंगार।

A. समर्पण लो सेवा का सार ' किसने किससे कहा है ?

उ०–' समर्पण लो सेवा का सार ' श्रद्धा ने मनु से कहा।

B. बनो संसृति के मूल रहस्य ' किसके लिए कहा गया है ?

उ०–' बनो संसृति के मूल रहस्य ' मनु के लिए कहा गया है|

C. विश्वभर सौरभ से भर जाए ' का क्या आशय है ?

उ०–विश्वभर सौरभ से भर जाए ' का आशय संसार के सुगन्ध से भर जाने से है।

D.रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०– श्रद्धा मनु को अपना समर्पण स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती हुई कहती है कि आप मेरे इस समर्पण को स्वीकार करके सृष्टि के क्रम को अनवरत जारी रखते हुए जीवन – मरण के मूल – रहस्यों को जाननेवाले बनो। यदि तुम अब भी जीवन से तटस्थ बने रहे तो इस सृष्टि का यहीं अन्त हो जाएगा। इसलिए मेरा समर्पण स्वीकार करके अर्थात् मुझे अपनी जीवन – संगिनी बनाकर इस मानव – सृष्टि की बेल को आगे बढ़ाओ। तुम मेरे संयोग से मानवरूपी सुमनों की रचना करके जीवन के सुन्दर खेल को जीभरकर खेलो , जिससे सारा संसार उन सुमनों की किलकारियोंरूपी सुगन्ध से महक उठे।

10. जलधि के फूटे कितने उत्स द्वीप ,
कच्छप डूबें – उतराय ;
किन्तु वह खड़ी रहे दृढ़ मूर्ति
अभ्युदय का कर रही उपाय।
शक्ति के विद्युत्कण , जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं , हो निरुपाय ;
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय

A.रेखांकित अंश की व्याख्या / भावार्थ कीजिए।

उ०– श्रद्धा मनु को समझाती है –किन्तु मेरे और तुम्हारे रूप में यह मानवता आज भी सुदृढ़ मूर्ति के समान खड़ी हुई अपने नवीन उत्थान का प्रयास कर रही है। श्रद्धा के कहने का आशय यह है कि मानवता महाप्रलय पर भी विजय प्राप्त

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

करके स्वयं के अस्तित्व को बचाने में सफल हुई है , तब तुम्हारी जीवन के असहाय होने की शंका बेकार ही है। इस सृष्टि की रचना शक्तिशाली विद्युत्कणों (मनुष्यों) से हुई है ; किन्तु जब तक ये विद्युत्कण अलग – अलग होकर भटकते रहते हैं , तब तक ये शक्तिहीन बने रहते हैं ; अर्थात् किसी भी प्रकार के निर्माण में असमर्थ रहते हैं। पर जिस क्षण ये परस्पर मिल जाते हैं , तब इनमें से अपार शक्ति का स्रोत प्रस्फुटित होता है। ठीक इसी प्रकार जब तक मानव अपनी शक्ति को संचित न करके उसे बिखेरता रहता है , तब तक वह शक्तिहीन बना रहता है। किन्तु यदि वह समन्वित हो जाए तो उसमें विश्वभर को जीत लेने की अपार शक्ति प्रकट होगी और मानवता अपने पूर्ण विकसित रूप में प्रतिष्ठित हो जाएगी।

B. इन पंक्तियों में श्रद्धा ने मनु को किसका उपाय बताया है ?

उ०– इन पंक्तियों में श्रद्धा ने मनु को मानवता की विजय का उपाय बताया है|

C. " शक्ति के विद्युत्कण , जो व्यस्त , विकल बिखरे हैं , हो निरुपाय " इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उ०– इस पंक्ति का भाव यह है कि इस सृष्टि की रचना शक्तिशाली विद्युत्कणों (मनुष्यों) से हुई है , किन्तु जब तक ये विद्युत्कण अलग – अलग होकर भटकते रहते हैं , तब तक वे शक्तिहीन बने रहते हैं ; अर्थात् किसी भी प्रकार के सृजन या निर्माण में असमर्थ रहते हैं

D. श्रद्धा के अनुसार मानव कब तक शक्तिहीन बना रहता है और यदि वह सभी उ०– उपायों से समन्वित हो जाए तो इसके क्या परिणाम होंगे ?

उ०– श्रद्धा के अनुसार मानव तभी तक शक्तिहीन बना रहता है जब तक वह अपनी शक्ति को संचित न करके उसे व्यर्थ में ही बिखेरता रहता है , किन्तु यदि वह सभी उपायों से समन्वित हो जाए तो उसमें सम्पूर्ण विश्व तक को जीत लेने की अपार शक्ति प्रकट हो जाती है। इस स्थिति में मानवता को भी अपने पूर्ण विकसित रूप में प्रतिष्ठित होने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

E. ' दृढ़ मूर्ति ' से आशय किसकी मूर्ति से है ?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

उ०– ' दृढ़ – मूर्ति ' से आशय मानवता की मूर्ति से है।

F. ' उत्स ' और ' अभ्युदय ' शब्दों का अर्थ लिखिए।

उ०– ' उत्स ' का अर्थ स्रोत और ' अभ्युदय ' का अर्थ नवीन उत्थान है।

G. ' द्वीप –कच्छप ' में कौन – सा अलंकार है ?

उ०– पद्यांश के अनुसार ' द्वीप , कच्छप ' में ' प ' वर्ण की पुनरावृत्ति में अनुप्रास अलंकार है , किन्तु प्रश्नानुसार ' द्वीप– कच्छप ' में रूपक अलंकार (द्वीपरूपी कच्छप) होगा।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)